बी.एस.पी द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति–दिनांक 26.05.2018

(1) बी.एस.पी की राष्ट्रीय अध्यक्ष सुश्री मायावती जी द्वारा पार्टी संविधान में कई अति महत्त्वपूर्ण संशोधन करके पार्टी को परिवारवाद आदि के अभिशाप से मुक्त रखने के दृढ़ संकल्प की पार्टी की आल–इण्डिया बैठक में घोषणा।

(2) सुश्री मायावती जी को भी मिलाकर व उनके बाद अब आगे भी बी.एस.पी. का जो भी ''राष्ट्रीय अध्यक्ष'' बनाया जायेगा, तो उसके जीते–जी व उसके ना रहने के बाद भी उसके परिवार के किसी भी नजदीकी सदस्य को पार्टी संगठन में उसे किसी भी स्तर के पद पर नहीं रखा जायेगा अर्थात उनके परिवार के सदस्य बिना किसी पद पर बने रहकर व एक साधारण कार्यकर्ता के रूप में ही केवल अपनी निःस्वार्थ भावना के साथ ही पार्टी में कार्य कर सकते हैं।

(3) बी.एस.पी. का राष्ट्रीय अध्यक्ष यदि अपनी ज्यादा उम्र होने की वजह से पार्टी में फील्ड का कार्य करने में अपने आपको कमजोर महसूस करता है तो तब फिर उसकी सहमति से ही उसे बी.एस.पी. का ''राष्ट्रीय संरक्षक'' नियुक्त कर दिया जायेगा जिसकी सलाहानुसार ही फिर बी.एस.पी. का नया बना राष्ट्रीय अध्यक्ष कार्य करेगा।

(4) साथ ही बी.एस.पी में पहली बार 'नेशनल कोआर्डिनेटर' की नियुक्ति। प्रथम चरण में दो (श्री वीर सिंह एडवोकेट व श्री जयप्रकाश सिंह) नियुक्त। इसी क्रम में पार्टी संगठन में भी काफी बदलाव व नई जिम्मेदारियों की घोषणा।

(5) उत्तर प्रदेश में श्री आर.एस.कुशवाहा पार्टी के नये अध्यक्ष नियुक्त किये गये। निवर्तमान अध्यक्ष श्री राम अचल राजभर को राष्ट्रीय महासचिव की बड़ी जिम्मेदारी व तीन राज्यों के कोओडिनेटर भी बनाये गये तथा श्री लालजी वर्मा छत्तीसगढ़ के कोआर्डिनेटर बनाये गये। श्री अशोक सिद्धार्थ दक्षिण भारत के तीन राज्यों के कोआर्डिनेटर नियुक्त किये गये।

(6) बी.एस.पी. किसी भी राज्य में व किसी भी चुनाव में किसी भी पार्टी के साथ केवल ''सम्मानजनक'' सीटें मिलने की स्थिति में ही वहाँ उस पार्टी के साथ कोई चुनावी गठबन्धन–समझौता करेगी अन्यथा फिर हमारी पार्टी अकेली ही चुनाव लड़ना ज्यादा बेहतर समझती है।

(7) हालांकि इस मामले में बी.एस.पी. की उत्तर प्रदेश सहित कई और राज्यों में भी गठबन्धन करके चुनाव लड़ने की बातचीत चल रही है, लेकिन फिर भी हर परिस्थिति का मुकाबला करने के लिये पार्टी के संगठन को हर स्तर पर तैयार करना है : बी.एस.पी. की राष्ट्रीय अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री व पूर्व सांसद सुश्री मायावती जी का लखनऊ में पार्टी के प्रदेश कार्यालय में आज आयोजित बी.एस.पी. की आल–इण्डिया की बैठक में सम्बोधन जिसका मुख्य अंश इस प्रकार से है :–

लखनऊ, 26 मई, 2018 : बी.एस.पी. के आल–इण्डिया के सभी छोटे–बड़े पदाधिकारियों एवं जनप्रतिनिधिगण, आज आप लोगों की यह अतिमहत्वपूर्ण बैठक देश में कुछ ही समय के बाद लोकसभा के होने वाले आमचुनाव व इससे पहले कुछ राज्यों में भी विधानसभा के होने वाले आमचुनाव को खास ध्यान में रखकर कुछ जरूरी **दिशा–निर्देश** देने के लिये बुलाई गई है। लेकिन इससे पहले मैं आप लोगों का ध्यान अपनी पार्टी में वर्तमान में चल रहे हालात् को मद्देनजर रखते हुये पार्टी व मूवमेन्ट के हित में इस पार्टी के **संस्थापक एवं जन्मदाता मान्यवर श्री कांशीराम जी** के जीवन से जुड़े उनके **कुछ सख़्त फैसलों** की तरफ दिलाना चाहती हूँ। हालांकि इस सम्बन्ध में वैसे आप

लोगों को यह मालूम है कि जब मान्यवर श्री कांशीराम जी ने डिफेन्स में अपनी सरकारी अधिकारी की नौकरी को छोड़कर **बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर** के **अधूरे सपने** को पूरा करने का फैसला लिया था तब फिर उन्होंने इसके लिये शुरू में ही अपने जीवन के तीन अति सख्त फैसले लिये थे **पहला**–मैं किसी के भी **शादी–विवाह, जन्म व मृत्यु** आदि के कार्यक्रम में शामिल नहीं होऊँगा ताकि मेरे जीवन का एक–एक पल **पार्टी व मूवमेन्ट** के कार्यों में ही लगा रहे। **दूसरा**–मैं आजीवन **अविवाहित** ही रहूँगा ताकि मैं **परिवारिक मोह** आदि से हमेशा दूर रहूँ और अपने खास उद्देश्य से कभी भी **भटक** ना सकूँ। **तीसरा**– मैं बी.एस.पी. में अपने **माँ–बाप, सगे भाई–बहिन एवं नजदीकी रिश्ते–नातों** आदि को भी हमेशा **सक्रिय राजनीति** से दूर रखूँगा।

इसके साथ ही मैं उनको पार्टी में ना कोई **पद** दूँगा और ना ही उनको कोई चुनाव लड़ाऊँगा तथा ना ही उनको राज्यसभा सांसद, विधायक व सरकार में मंत्री आदि भी बनाऊँगा अर्थात मेरे परिवार के ये लोग इस पार्टी में केवल **एक साधारण कार्यकर्ता** के रूप में **निःस्वार्थ** भावना से ही अपनी पार्टी के लिये **फ्री सेवायें** दे सकते हैं, इसके लिये उन्हें कोई मनाई नहीं है किन्तु इनके इस तीसरे सख्त फैसले से उनके **माँ–बाप, सगे भाई–बहिन व नजदीकी रिश्तेनाते** आदि काफी ज्यादा दुःखी रहते थे। लेकिन फिर भी इन सबकी परवाह ना करते हुये मान्यवर श्री कांशीराम जी ने पार्टी व मूवमेन्ट के हित में अपनी जिन्दगी के ये तीन अहम व अति सख्त फैसले लिये थे जिनसे प्रेरित होकर ही फिर मैंने भी **मान्यवर श्री कांशीराम जी** के जीवन से जुड़े इन तीनों अहम व अति सख्त फैसलों पर, पूरी ईमानदारी व निष्ठा से अमल किया है। हालांकि इनके तीसरे लिये गये सख्त फैसले में अर्थात परिवार के नजदीकी लोगों को सक्रिय राजनीति से दूर रखने के लिये गये इस सख्त फैसले में पिछले वर्ष यहाँ उत्तर प्रदेश में विधानसभा के हुये आमचुनाव के बाद पार्टी के अधिकांश लोगों के विशेष आग्रह पर ही थोड़ा परिवर्तन करते हुये फिर मैंने अपने छोटे भाई **आनन्द कुमार** को पार्टी में खासकर **पेपर–वर्क** को देखने के लिये उसे पार्टी संगठन के एक पद पर रख लिया था। परन्तु इस मामले में दुःख की बात यह रही कि इस फैसले के कुछ समय के बाद ही फिर **कांग्रेस पार्टी व अन्य पार्टियों** की तरह ही बी.एस.पी. में भी **परिवारवाद** को बढ़ावा देने की आयेदिन मीडिया में काफी खराब खबरें आनी शुरू हो गई।

इसके साथ ही जो लोग अपने निजी स्वार्थ में पार्टी को छोड़कर दूसरी पार्टियों में चले गये थे तो फिर वे भी मान्यवर श्री कांशीराम जी के जीवन के लिये गये खासकर तीसरे फैसले का हवाला देकर अर्थात मान्यवर श्री कांशीराम जी द्वारा अपने परिवार के लोगों को पार्टी संगठन में किसी भी पद पर नहीं रखने व उन्हें चुनाव आदि से भी दूर रखने के फैसले का उदाहरण देकर अपनी पार्टी के सीधे–साधे लोगों को इसकी आड़ में गुमराह करना शुरू कर दिया था।

इसके साथ–साथ मेरे अन्य भाई–बहिन व नजदीकी रिश्ते–नाते आदि भी फिर अपने स्वार्थ में यह कहकर आनन्द कुमार की तरह ही, पार्टी के संगठन में पद पर रखने के लिये दबाव बनाने लगे कि आनन्द कुमार से पहले हम लोग भी बहिनजी की देखभाल के लिये कई–कई वर्ष तक इनके साथ में रहे हैं। इसलिए हमें भी आनन्द कुमार की तरह ही मौका मिलना चाहिये।

इतना ही नहीं बल्कि इसी ही दौरान् अपनी पार्टी के भी कुछ **स्वार्थी व अवसरवादी** किस्म के लोग फिर धीरे–धीरे अपने परिवार के नजदीकी लोगों को पार्टी में आगे करने व बढ़ाने का भी सपना देखने लगे कुछ ने तो इस बारे में मुझे सीधे ही आग्रह करना भी शुरू कर दिया था। लेकिन ऐसी स्थिति में, पार्टी व मूवमेन्ट के हित में, मेरी इस मुश्किल को दूर करने के लिये अच्छी बात यह रही कि **फिर मेरे छोटे भाई आनन्द कुमार ने पार्टी व मूवमेन्ट के हित में खुद ही मुझसे यह कहा कि बहिनजी, आपको परिवार के लोगों की इन सब बातों से परेशान नहीं होना चाहिये और मैं बिना पद के रहकर पूर्व की तरह ही पार्टी की निःस्वार्थ भावना से सेवा करता रहूँगा**''

इस प्रकार, इन सब बातों को अति–गम्भीरता से लेते हुये फिर पार्टी व मूवमेन्ट के हित में **मान्यवर श्री कांशीराम जी** के जीवन से जुड़े इस सख्त फैसले पर अर्थात पार्टी में परिवार के सभी नजदीकी सदस्यों को सक्रिय राजनीति से दूर रखने व उन्हें पार्टी में किसी भी पद पर नहीं रखने के इस फैसले पर फिर पूरी सख्ती से मुझे अमल करना पड़ा है ताकि फिर देश में कोई भी विरोधी पार्टी व मीडिया आदि भी मुझ पर कांग्रेस व अन्य पार्टियों की तरह कभी भी **परिवारवाद** को बढ़ावा देने का यह

आरोप ना लगा सकें। इसके साथ–साथ मेरे परिवार के सदस्य तथा पार्टी के कोई भी छोटे–बड़े पदाधिकारी भी इसकी आड़ में फिर इसका **नाजायज़** फायदा ना उठा सके।

इतना ही नहीं बल्कि इन सब बातों को ध्यान में रखकर अब हमारी पार्टी ने अपने मूवमेन्ट के हित में, अपनी **पार्टी के संविधान** में कुछ जरूरी फैसले भी लिये हैं जिन्हें मैं आज आप लोगों के **संज्ञान** में लाना बहुत जरूरी समझती हूँ। इस सम्बन्ध में मैं आप लोगों को यह बताना चाहती हूँ कि हमने अपनी पार्टी के **संविधान** में अब खास फैसला यह लिया है कि **पहला–मुझे खुद को भी मिलाकर व मेरे बाद अब आगे भी बी.एस.पी. का जो भी ''राष्ट्रीय अध्यक्ष'' बनाया जायेगा तो फिर उसके जीते–जी व ना रहने के बाद भी उसके परिवार के किसी भी नजदीकी सदस्य को पार्टी संगठन में उसे किसी भी स्तर के पद पर नहीं रखा जायेगा** अर्थात उनके परिवार के सदस्य बिना किसी पद पर बने रहकर व एक साधारण कार्यकर्ता के रूप में ही केवल अपनी **निःस्वार्थ भावना** के साथ ही पार्टी में कार्य कर सकते हैं।

दूसरा–उनके परिवार के किसी भी नजदीकी सदस्य को ना कोई चुनाव लड़ाया जायेगा तथा ना ही उसे कोई **राज्यसभा सांसद, एम.एल.सी. व मंत्री** आदि भी बनाया जायेगा और ना ही उसे अन्य किसी भी **राजनैतिक उच्च पद** पर रखा जायेगा। लेकिन पार्टी में राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद को छोड़कर बाकी अन्य सभी स्तर के पदाधिकारियों के परिवार के लोगों पर **''विशेष परिस्थितियों में''** यह सब शर्तें लागू नहीं होगी।

इसके साथ–साथ एक यह भी फैसला लिया गया कि बी.एस.पी. का राष्ट्रीय अध्यक्ष अपनी ज्यादा उम्र होने की वजह से जब वह पार्टी में फील्ड का कार्य करने में, अपने आपको कमजोर महसूस करता है तब फिर उसकी सहमति से ही उसे बी.एस.पी. का ''**राष्ट्रीय संरक्षक**'' नियुक्त कर दिया जायेगा जिसकी सलाहानुसार ही फिर बी.एस.पी. का नया बना राष्ट्रीय अध्यक्ष कार्य करेगा।

इसके साथ ही, पार्टी के संविधान में एक यह भी फैसला लिया गया कि देश में बी.एस.पी. के जनाधार को बड़े–पैमाने पर बढ़ाने के लिये अब पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा पार्टी के कुछ वरिष्ठ, योग्य व सक्षम लोगों को पार्टी का राष्ट्रीय स्तर पर **''नेशनल कोओडिनेटर''** भी नियुक्त किया जायेगा जो ये लोग, पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के **दिशा–निर्देशन** में ही पूरे देश में, पार्टी संगठन के चल रहे कार्यों की समीक्षा करेंगे। इसके साथ ही ये लोग कमज़ोर राज्यों में कैडर–कैम्प व छोटी–छोटी जनसभाओं आदि के ज़रिये भी पार्टी के जनाधार को वहाँ बढ़ायेंगे और समय–समय पर उन सबसे पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष को भी जरूर अवगत करायेंगे। अब इस नेक कार्य की बिना कोई देरी किये हुये आज से ही मैं पार्टी हित में इसकी शुरूवात भी कर रही हूँ और आज मैं प्रथम चरण के तहत् पार्टी के प्रति हर मामले में समर्पित दो वरिष्ठ, योग्य व सक्षम लोगों को अर्थात **श्री वीर सिंह एडवोकेट, राज्यसभा सांसद एवं पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव व श्री जयप्रकाश सिंह, पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष** को अर्थात इन दोनों को बी.एस.पी. का **राष्ट्रीय स्तर पर ''नेशनल कोओडिनेटर''** बना रही हूँ।

इन दोनों के पार्टी में कार्यों के बारे में मैं आप लोगों को यह भी अवगत कराना चाहती हूँ कि श्री वीर सिंह एडवोकेट, राज्यसभा सांसद अभी तक **महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश व तेलंगाना** इन तीनों राज्यों में कोओडिनेटर के पद पर कार्य कर रहे थे जिनको आज यह बड़ी जिम्मेवारी देकर अब इन तीनों राज्यों के कोओडिनेटर के पद से हटा दिया गया है। इनके साथ–साथ श्री जयप्रकाश सिंह भी अभी तक **दिल्ली प्रदेश व राजस्थान प्रदेश** में कोओडिनेटर के पद पर कार्य करते रहे हैं इन्हें भी अब यहाँ से हटा दिया गया है।

वैसे श्री वीर सिंह एडवोकेट के बारे में तो आप लोग काफी कुछ जानते हैं लेकिन श्री जयप्रकाश सिंह के बारे में अभी आप लोग ज्यादा कुछ नहीं जानते हैं जिनका संक्षेप में जीवन–परिचय यह है कि यह दलित वर्ग से हैं और उत्तर प्रदेश में जनपद गौतम बुद्ध नगर के रहने वाले हैं। इनके पिता सरकारी अध्यापक व एक भाई वकील है तथा एक भाई अपना खुद का मेडिकल स्टोर भी चलाता हैं और इन्होंने अर्थात श्री जय प्रकाश ने खुद एल.एल.एम. की शिक्षा प्राप्त की है और इनका जन्म 1985 का है तथा यह अविवाहित भी हैं। इन्होंने बी.एस.पी. के मिशन के लिये सन् 2009 से ही अपने माँ–बाप का घर छोड़ा हुआ है

इस सम्बन्ध में इनका खुद का यह कहना है कि जब मैं (श्री जय प्रकाश) बी.एस.पी. के मिशन में काम करने लगा तब मेरे माता–पिता व भाईयों आदि ने मुझे इस कार्य से रोकने का पूरा–पूरा प्रयास किया, जिसकी वजह से मैं मानसिक रूप से उनके दबाव में रहने लगा था और फिर एक दिन मैंने यह निर्णय लिया कि क्यों ना घर ही छोड़ दिया जाये, जिससे मेरे देर–सवेर आने से घर वाले, जो मुझे यह धमकी देते है कि 'तू कुछ करता–धरता तो है नहीं और ऊपर से, हमें परेशान और करता है।' तब फिर मैंनें सन् 2009 के अन्त में अपने माँ–बाप का घर छोड़कर, दिल्ली में एक कमरा किराये पर ले लिया, जिसका व मेरे अन्य सभी खर्चों का भार फिर मेरे कुछ साथी एवं समाज के लोग ही मिलकर खुद उठाते थे। इतना ही नहीं बल्कि इन्होंने कभी घर वापिस ना जाने व घरवालों से भी सभी रिश्ते–नाते आदि तोड़कर फिर बी.एस.पी. के मिशन में ही आजीवन अविवाहित रहकर, काम करने का भी फैसला ले लिया।

इस प्रकार यह इनका संक्षिप्त जीवन–परिचय है जो इन्होंने मुझे लिखित में भी दिया है और अब मुझे पार्टी में भी इनकी अभी तक की रही कार्यशैली को देखकर इन पर यह पूरा भरोसा हो गया है कि यह बी.एस.पी. के मिशन में पूरी ईमानदारी व निष्ठा से श्री वीर सिंह एडवोकेट के साथ मिलकर पूरे देश में नेशनल कोओडिनेटर के पद पर रहकर कार्य करेंगे अर्थात आज मैंने पूरे देश में पार्टी संगठन की इन दोनों के ऊपर जो यह बहुत बड़ी जिम्मेवारी सौंपी है इस मामले में मुझे ये दोनों लोग कभी भी निराश नहीं होने देंगे और मेरे इस फैसले की हमेशा कदर भी जरूर करेंगे, ऐसा मुझे इन दोनों के ऊपर पूरा–पूरा भरोसा भी है, किन्तु फिर भी यहाँ मैं इन दोनों लोगों को यह भी आगाह कर देना चाहती हूँ कि मैं बी.एस.पी. की मूवमेन्ट को आगे बढ़ाने के लिये केवल इन दोनों लोगों के ऊपर ही अभी निर्भर रहने वाली नहीं हूँ क्योंकि अभी मैं अगले लगभग 20–22 वर्षों तक खुद ही आगे व सक्रिय रहकर पार्टी की गतिविधियों को बराबर आगे बढ़ाती रहूँगी और अब ऐसे में अगले लगभग 20–22 वर्षों तक अभी पार्टी में किसी को भी पार्टी का मुखिया बनने का सपना नहीं देखना चाहिये और ना ही किसी को अभी मेरा उत्तराधिकारी बनने का भी सपना देखना चाहिये।

इतना ही नहीं बल्कि अब पार्टी के लोगों को, पार्टी में किसी भी पद आदि के स्वार्थ में ना पड़कर इन्हें अपने पूरे त्याग व समर्पण के साथ ही खासकर अपने बच्चों व आगे आने वाली पीढ़ी के खुशहाल भविष्य के लिये ही अपनी पार्टी में पूरी ईमानदारी व सच्ची लग्न के साथ ही कार्य करना चाहिये जिनके लिये मैंने अपनी पूरी जिन्दगी भी समर्पित की है और वैसे भी मुझे अपनी पार्टी व मूवमेन्ट के हित में अभी लगभग 20–22 वर्षों तक जिन्दा रहना बहुत जरूरी है। बाकी तो कुदरत के हाथ में है।

लेकिन इसके साथ–साथ इस दौरान् मुझे हर स्तर पर सक्रिय व ठीक भी बने रहना बहुत जरूरी है जिसमें मुझे अपनी पार्टी के लोगों के भी पूरे सहयोग देने की खास जरूरत है वरना फिर पार्टी में आगे लम्बी अवधि तक मेरा कार्य करते रहना बहुत ज्यादा मुश्किल हो जायेगा और यह खास व जरूरी बात यहाँ मैं इसलिये कह रही हूँ क्योंकि मेरे **राज्यसभा से इस्तीफा** देने के बाद व पिछले वर्ष के अन्त में जब मैं मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ स्टेट की पार्टी की संयुक्त हुई रैली को भोपाल में सम्बोधित करने के लिये गई थी तब वहाँ मैं ऐहतियात के तौर पर एक दिन पहले ही भोपाल में पहुँच गई थी। वहाँ पार्टी के लोगों ने मेरे ठहरने के लिये बहुत ऊँचाई पर बने एक ऐसे पुराने होटल में प्रबन्ध किया हुआ था जिसमें अन्दर जाने के लिये उस होटल के मुख्य प्रवेश द्वार पर लगभग एक सवा फुट ऊँचाई व बहुत कम चौड़ी वाली लगभग 20–25 खड़ी सीढ़ियाँ बनी हुई थी जहाँ से मुझे ले जाया गया था। लेकिन अगले दिन जब मैं रैली को सम्बोधित करने के लिये होटल से प्रोग्राम स्थल पर जा रही थी तो तब फिर उन सीढ़ियों से उतरते समय मेरे घुटनों में अचानक बहुत तेजी से कुछ टूटने व टक होने की आवाज आई और फिर तुरन्त ही उसी समय मेरे घुटनों में काफी भयंकर दर्द भी शुरू हो गया था जिसकी वजह से फिर मुझे गाड़ी में चढ़ना व उतरना बहुत ज्यादा मुश्किल हो गया था क्योंकि घुटने में अन्दर काफी ज्यादा इन्जरी हो गई थी और तभी घुटना काफी ज्यादा सूज भी गया था। लेकिन फिर भी मैं जैसे–तैसे करके व भयंकर दर्द को भी झेलते हुये वहाँ प्रोग्राम स्थल पर पहुँच गई और ऐसी स्थिति में भी मैंने वहाँ पार्टी व मूवमेन्ट के हित में लगभग पौने दो घन्टे तक खड़े होकर ही पूरे विस्तार से अपनी बात रखी। इसके बाद फिर आगे उसी अति–पीड़ा की हालत में मैंने जैसे–तैसे करके **महाराष्ट्र व साऊथ के राज्यों** के भी प्रोग्राम अटेण्ड किये और तब फिर वापिस आकर मैंने दिल्ली व लखनऊ में अपने घुटनों का इलाज करवाया, लेकिन काफी देरी से इलाज शुरू होने की वजह से अब मेरे घुटनों को

ठीक होने में भी काफी ज्यादा समय लग रहा है जबकि डाक्टर लोग तो शुरू में मेरे घुटनों के आपरेशन करने की ही बात करते रहे हैं। लेकिन मैंने केवल उनकी सिकाई करने व दवाई आदि खाने से ही अपने घुटने काफी हद तक अब ठीक कर लिये हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि **मेरे स्वास्थ्य को ठीक रखने के मामले में व मुझे राजनीति आदि में भी सक्रिय** बनाये रखने के लिये काफी कुछ अपने पार्टी के लोगों के ऊपर ही यह निर्भर करता है कि ये लोग मेरे दौरे के समय में, मेरे ठहरने व मंच पर भी किस प्रकार का प्रबन्ध करते है। हालांकि मुझे यह पूरी उम्मीद है कि हमारी पार्टी के लोग भोपाल की हुई इस अति दुःखद घटना से सबक सीखकर अब अपनी हर जिम्मेंवारी को आगे पूरे ठीक ढंग से जरूर निभायेंगे और अपना पूरे तन, मन, धन से पार्टी को अपना सहयोग भी देंगे ताकि मेरी जिन्दगी का आखिरी पल भी अपनी पार्टी की मूवमेन्ट को आगे बढ़ाने के लिये ही लगा रहे।

अब संक्षेप में मेरा यही कहना है कि आज मैंने आप सब लोगों की मौजूदगी में **श्री वीर सिंह एडवोकेट, राज्यसभा सांसद व श्री जय प्रकाश** को बी.एस.पी. का जो **''नेशनल कोओडिनेटर''** बनाया है और साथ ही इन दोनों को पार्टी के राष्ट्रीय संगठन में भी जो रखा गया है और अब ये दोनों लोग आपस में मिलकर पूरे देश में स्टेट वाईज अपनी पार्टी के संगठन के कार्यों की पूरी ईमानदारी व निष्ठा से समीक्षा करेंगे तथा कमजोर राज्यों में ये लोग खुद कैडर–कैम्प व छोटी–छोटी जनसभायें आदि लेकर वहाँ अपनी पार्टी के जनाधार को भी काफी तेजी से आगे बढ़ायेंगे और यह सब कार्य ये लोग पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष की दिशा–निर्देशन में ही करेंगे। खासकर कमजोर राज्यों में और जिन राज्यों में विधानसभा के आमचुनाव होने का समय नजदीक होगा वहाँ ये दोनों लोग थोड़ा ज्यादा समय देंगे।

इनके अलावा अब मैं आप लोगों को पार्टी संगठन में कुछ और भी किये गये परिवर्तन के बारे में भी यह बताना चाहूँगीं। **श्री रामअचल राजभर**, वर्तमान विधायक व पूर्व मन्त्री एवं वर्तमान में उत्तर प्रदेश स्टेट के अध्यक्ष को आज उत्तर प्रदेश स्टेट के अध्यक्ष पद से हटाकर इनको भी अब इससे बड़ी जिम्मेंवारी सौंपी जा रही है और अब इनको इसके स्थान पर पार्टी का **राष्ट्रीय महासचिव** बनाया जा रहा है। इसके साथ–साथ अब इनको **उत्तराखण्ड, बिहार व मध्य प्रदेश** इन तीनों राज्यों का कोओडिनेटर भी बना दिया गया है और यह इन तीनों राज्यों में अपना बराबर–बराबर समय देंगे। अब श्री अशोक सिद्धार्थ को उत्तर प्रदेश व मध्यप्रदेश से हटा दिया गया है क्योंकि अब यह केवल साऊथ इण्डिया के तीन राज्यों को तैयार करने पर ही अपना समय लगायेंगे।

साथ ही श्री एस.सी. मिश्रा, राज्यसभा सांसद व राष्ट्रीय महासचिव को भी पार्टी के राष्ट्रीय स्तर पर लिगल कार्य (legal work) देखने व अपरकास्ट समाज को भी बी.एस.पी. में जोड़ने की जिम्मेवारी सौंपी गई है, हालांकि यह जिम्मेवारी इनको पहले से ही दी हुई है जो अभी भी बरकरार बनी रहेगी। इसके साथ ही अब श्री रामअचल राजभर के स्थान पर अति पिछड़े वर्ग से सम्बन्धित **श्री आर.एस. कुशवाहा** को उत्तर प्रदेश स्टेट का अध्यक्ष बना दिया गया है, जो पार्टी के पूर्व एम.एल.ए. व एम.एल.सी. भी रहे हैं और इन्होंने पार्टी से **रायबरेली लोकसभा** की सीट पर आमचुनाव भी लड़ा है।

इनके अलावा **श्री गौरी प्रसाद उपासक**, रिटायर्ड सरकारी कर्मचारी को, जो अभी तक खासकर **तेलंगाना व आन्ध्र प्रदेश** में कोओडिनेटर के पद पर कार्य कर रहे हैं, अब इनको इन दोनों राज्यों के साथ–साथ **महाराष्ट्र स्टेट का भी सीनियर कोओडिनेटर** बना दिया गया है। साथ ही **श्री प्रमोद रैना** को भी इन तीनों राज्यों का इनसे जूनियर कोओडिनेटर बना दिया गया है। इस प्रकार अब ये दोनों लोग मिलकर **महाराष्ट्र, तेलंगाना व आन्ध्र प्रदेश** में बराबर–बराबर अपना समय देंगे।

श्री लालजी वर्मा उत्तर प्रदेश विधानसभा में बी.एस.पी. विधायक दल के नेता को, छत्तीसगढ़ स्टेट का कोओडिनेटर बना दिया गया है। हालांकि इनको इससे बड़ी जिम्मेवारी सौंपी जानी थी, लेकिन परिवार में इनके एकमात्र पुत्र की मृत्यु होने की वजह से अब इनको काफी कुछ समय अपने परिवार को भी देना बहुत जरुरी हो गया है। इसके अलावा, कुछ और भी राज्यों में थोड़े परिवर्तन किये गये हैं जिनकी जानकारी सम्बन्धित राज्यों को अलग से दे दी गयी है। इसलिये उन्हें मैं यहाँ फिर से दोहराना नहीं चाहती हूँ।

इन्हीं जरूरी बातों के साथ ही अब मैं आप लोगों का ध्यान देश में जल्दी ही लोकसभा के होने वाले आमचुनाव की तरफ व इससे पहले देश के कुछ राज्यों में विधानसभा के होने वाले आमचुनाव की तरफ भी दिलाना चाहती हूँ। कर्नाटक में विधानसभा के हुये आमचुनाव के बाद सरकार बनाने के मामले में बीजेपी की किरकिरी होने की वजह से अब यह पार्टी समय से पहले भी **लोकसभा के आमचुनाव** करवा सकती है। हालांकि इस चुनाव में (कर्नाटक) बी.एस.पी. का भी एक एम.एल.ए. भी यह चुनाव जीतकर आया है और जहाँ तक अब **चुनावों में आगे गठबन्धन करके चुनाव लड़ने का सवाल है** तो इस सम्बन्ध में वैसे आप लोगों को यह मालूम है कि **हमारी पार्टी ने इस सम्बन्ध में शुरू से ही यह फैसला लिया है कि हमारी पार्टी किसी भी राज्य में व किसी भी चुनाव में, किसी भी पार्टी के साथ केवल "सम्मानजनक" सीटें मिलने की स्थिति में ही तब फिर वहाँ उस पार्टी के साथ कोई चुनावी गठबन्धन–समझौता करेगी अन्यथा फिर हमारी पार्टी अकेली ही चुनाव लड़ना ज्यादा बेहतर समझती है। हालांकि इस मामले में हमारी पार्टी की उत्तर प्रदेश सहित कई और राज्यों में भी गठबन्धन करके चुनाव लड़ने की बात–चीत चल रही है, लेकिन फिर भी आप लोगों को हर परिस्थिति का मुकाबला करने के लिये अपने–अपने प्रदेश में पार्टी के संगठन को हर स्तर पर तैयार करना है।**

इसके साथ ही **कैडर** के आधार पर पार्टी के जनाधार को भी सर्वसमाज में बड़े–पैमाने पर बढ़ाना भी है और यह कार्य आप लोगों को मई के महीने में पार्टी संगठन की समीक्षा का कार्य पूरा करने के बाद ही शुरू करना है और इस मामले में खासकर **राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़** आदि प्रदेश के लोगों को ज्यादा ध्यान देना है क्योंकि यहाँ लोकसभा के आमचुनाव होने से पहले ही विधानसभा के आमचुनाव होने वाले हैं अर्थात पूरे देश में आपको पार्टी संगठन का जो भी समयबद्ध कार्य दिया हुआ है उसे आप लोगों को समय से जरूर पूरा कर लेना है तथा कैडर के आधार पर पार्टी के जनाधार को भी बड़े पैमाने पर बढ़ाना है, ऐसी मुझे आप लोगों से पूरी–पूरी उम्मीद भी है। इसके अलावा लोकसभा व विधानसभा उम्मीदवारों के चयन के बारे में भी जो आप लोगों को समय–समय पर जरूरी **दिशा–निर्देश** दिये गये हैं उसे भी आप लोगों को साथ में करते रहना है।

इसके साथ ही आप लोगों को यह भी मालूम है कि देश में कोई भी चुनाव नजदीक आते ही फिर पूर्व की तरह यहाँ विरोधी पार्टियों के लोग खासकर **दलितों, आदिवासियों, पिछड़े वर्गों, मुस्लिम व अन्य धार्मिक अल्पसंख्यकों** आदि के **स्वार्थी एवं बिकाऊ** नेताओं को पर्दे के पीछे से इस्तेमाल करके व उनके जरिये **विभिन्न संगठन एवं पार्टी आदि** भी बनाके चुनाव में फिर अपने फायदे के हिसाब से ही उनके उम्मीदवार भी खड़ा करवा सकते हैं ताकि फिर इन वर्गों का वोट आपस में ही बंट जाये, इससे भी आप लोगों को अपने इन सभी वर्गों के लोगों को कैडर के जरिये जरूर सावधान रखना है। इसके साथ–साथ जनता को गुमराह करने के लिये भी विरोधी पार्टियों द्वारा चुनाव के नज़दीक **मीडिया व अन्य और हथकण्डों** के ज़रिये भी क़िस्म–क़िस्म की अफवाहें फैलाई जा सकती हैं जिनसे भी उन्हें आप लोगों को सावधान रखना है।

इसके अलावा आप लोगों को **धरना–प्रदर्शन** आदि करने के मामले में भी पूर्व की तरह ही सावधानियाँ बरतनी बहुत जरूरी है। अब आपको केवल अपनी पार्टी के ही **धरना–प्रदर्शन** में ही शामिल होना है अर्थात किसी और संगठन के प्लेटफार्म पर नहीं करना है। इसके साथ ही मेरा आप लोगों से यह भी कहना है कि अब आप लोगों को यहाँ से जाकर सबसे पहले अपनी पार्टी के संगठन की समीक्षा करने के अधूरे पड़े कार्यों को बहुत जल्दी ही पूरा करना है। इसके बाद फिर आप लोगों को पार्टी संगठन की शेष बची कमेटियों के गठन का कार्य और उनके पदाधिकारियों को कैडर देने का भी कार्य समय से पूरा जरूर कर लेना चाहिये। इन्हीं जरुरी बातों के साथ ही अब मैं अपनी बात यहीं समाप्त करती हूँ। **जय भीम, जय भारत।**

इसके साथ ही सुश्री मायावती जी ने उत्तर प्रदेश के बाहर के राज्यों से आये बी.एस.पी के पदाधिकारियों की राज्यवार भी अलग–अलग से बैठकें लीं, जिसमें उनके राज्यों के पार्टी के कार्यों की समीक्षा की गई तथा आगे की तैयारियों के समबंध में जरुरी दिशा–निर्देश भी दिये गये।

जारीकर्त्ता :
बी.एस.पी. उ.प्र. राज्य कार्यालय
12 माल एवेन्यू, लखनऊ।